देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

Impact Factor
7.523

ISSN : 2395-7115
October 2023
Vol.-18, Issue-4(1)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

साहित्य में गांधी
एवं
गांधी का साहित्य
विशेषांक

विशेषांक सम्पादक :
डॉ. अमिता प्रकाश

सम्पादक :
डॉ. नरेश मिश्राग
एडवोकेट

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

अक्टूबर 2023

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. अमिता प्रकाश	08-10
2.	आधुनिक हिन्दी कविता पर गाँधी के वैचारिक दर्शन का प्रभाव	डॉ. अनिता जोशी	11-16
3.	गांधी के राम बनाम साहित्य के राम	बबीता दौरियाल	17-20
4.	महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन के प्रति ब्रिटिश सेवी वर्ग की मनोवृत्तिसर हरकोर्ट बटलर के विशेष सन्दर्भ में एक मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. बीना जोशी	21-25
5.	प्रेमचंद के साहित्य में गाँधीवादी विचारधारा	डॉ० आशा हर्बोला	26-29
6.	गांधी और हिन्दी सिनेमा	डॉ. विद्या शंकर विभूति	30-34
7.	हिन्दी साहित्य में गांधी दर्शन की अप्रतिम अभिव्यक्ति	डॉ. हेमचन्द्र दुबे	35-37
8.	महात्मा गांधी जी के चलाये गये आन्दोलनों में महिलाओं की सहभागिता (कुमाऊ के परिपेक्ष्य में विशेष)	डॉ. कंचन वर्मा	38-41
9.	हिन्दी भाषा एवं साहित्य में गांधीवादी विचारधारा	डॉ. जगदीश चन्द्र जोशी	42-44
10.	हिन्दी कविता में महात्मा गांधी की विचारधारा का प्रभाव	डॉ. विक्रम सिंह	45-49
11.	प्रेमचंद के साहित्य में गांधीवादी विचारधारा	डॉ. ममता	50-53
12.	हिन्दी नाट्य साहित्य में गांधी दर्शन की अभिव्यक्ति	डॉ. प्रकाश कृष्णदेव धुमाल	54-61
13.	हिन्दी साहित्य में गाँधीवादी विचारधारा	पूजा	62-64
14.	हिन्दी साहित्य में गाँधी-दर्शन की अभिव्यक्ति	डॉ. अचला पाण्डेय	65-70
15.	हिन्दी साहित्य गाँधीवादी विचारधारा में	डॉ. शशि बाला रावत	71-73
16.	गाँधीवाद की प्रासंगिकता	प्रेमा	74-76
17.	गांधीवाद और हिंदी साहित्य	डॉ० संजीव सिंह नेगी	77-82
18.	आधुनिक हिन्दी-साहित्य पर गाँधीवाद का प्रभाव	डॉ. कृष्णा	83-87
19.	गाँधी और हिन्दी साहित्य	प्रो० चंद्रा खत्री	88-96
20.	गांधी चिंतन व प्रेमचंद का उपन्यास साहित्य	डॉ. मीनाक्षी राणा	97-100
21.	गांधी दर्शन : एक समग्र मूल्यांकन	प्रो. रेनू प्रकाश	101-105
22.	हिंदी नाट्य साहित्य में गांधीवादी दर्शन का प्रभाव, प्रसाद एवं प्रसादोत्तर सामाजिक नाटकों के विशेष संदर्भ में	डॉ. जयश्री भंडारी	106-112
23.	आधुनिक संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय भावना एवं संस्कृत वांग्मय में महात्मा गांधी	डॉ० शालिनी पाठक	113-118
24.	गाँधी और राष्ट्र भाषा हिंदी	डॉ. तजिंदर भाटिया	119-122
25.	नागार्जुन के काव्य में गांधी दर्शन	डा० नेहा भाकुनी	123-129
26.	गांधीवाद की प्रासंगिकता	राघवेन्द्र सिंह	130-133
27.	हिंदी साहित्य में गांधी दर्शन	डॉ. भावना	134-137
28.	गांधी जी का शैक्षिक दर्शन	मनोज भाकुनी, डॉ. शिव भोलेनाथ श्रीवास्तव	138-142
29.	गाँधी का राष्ट्रवाद	दुर्गेश नंदिनी	143-146

30.	हिंदी साहित्य में गाँधीवादी विचारधारा	डॉ. सुनीता राठौर	
31.	हिन्दी नाटक में गाँधी चिंतन	डॉ रहिम रवीन्द्रन	147-1
32.	हिंदी दलित कविता में गाँधी व अम्बेडकर की वैचारिक दृष्टि	डॉ० गोपाल राम	152-1
33.	मैथिलीशरण गुप्त रचित 'पंचवटी' में व्यक्त गाँधी विचारधारा	प्रो. रिद्दि पी. तलाविया	156-1
34.	हिन्दी साहित्य में गांधीवादी विचारधारा	डॉ. वंदीता गुप्ता	164-1
35.	साहित्य में चित्रित गाँधी जी के विभिन्न सिद्धान्त	डॉ. सुधा देवी दीक्षित	168-1
36.	गाँधीवाद से प्रभावित आधुनिक हिंदी साहित्य	कु. सपना	171-1
37.	किसानों का मसीहा गाँधी-चंपारण किसान आंदोलन के संदर्भ में	अन्नपूर्णा भोसले	177-1
38.	गांधी का चिंतन : प्राचीनता से समन्वय और आधुनिकता का प्रकटीकरण	डॉ. शैलेन्द्र तिवारी	181-1
39.	गाँधीवाद की वर्तमान समय में प्रासंगिकता	श्री भूपेन्द्र सिंह	184-1
40.	गांधी बनाम प्रेमचंद	डॉ. सीमा कुमारी	191-1
41.	साहित्य में गांधी एवं गांधी का साहित्य	विजय पाटिल	194-1
42.	प्रेमचंद के उपन्यास 'निर्मला' में गांधीवाद	डॉ. आलपाटि भानु प्रसाद	200-2
43.	आधुनिक हिन्दी साहित्य में महात्मा गांधी की जीवनी एक अद्भुत विश्लेषण	कर्रा पृथ्वी	202-2
44.	हिन्दी साहित्य में गांधीवादी विचारधारा	डॉ. सरोज बाला श्याम	205-2
45.	गांधी जी का चरित्र के बिना ज्ञान	डॉ. सुशील चन्द्र बहुगुणा	209-2
46.	हिंदी साहित्य में गांधी विचारधारा का प्रभाव	डॉ सीताराम आतिया	214-2
47.	वर्तमान समय में गांधीवाद की प्रासंगिकता	श्रीमती कांता वर्मा	219-2
48.	'टेढ़े-मेढ़े रास्ते' उपन्यास में गाँधीवादी विचारधारा	डॉ. जिनु जॉन	223-2
49.	'बा' उपन्यास में गांधी विचार	श्रुतिमफत भाई पटेल	227-2
50.	गाँधीवाद की प्रासंगिकता	अनीता दानू	231-2
51.	महात्मा गांधी का परिचय व गांधीवादी की प्रासंगिकता	डॉ. पूजा चौहान	234-2
52.	गाँधीवाद एवं हिन्दी साहित्य	डॉ. सुशील बिलुँग	238-2
53.	गांधी से प्रभावित आधुनिक हिंदी साहित्य	काकर मुत्यालराव	243-2
54.	गांधी जी के विचारों की प्रासंगिकता : एक समाजशास्त्रीनय विश्लेलषण	शैलजा, प्रो0 (डॉ.) रेनू प्रकाश	248-2
55.	हिन्दी साहित्य और गाँधी दर्शन	डॉ. संतोष कुमार लिल्हारे	251-2
56.	रमेशचन्द्र शाह का रचनाकर्म : एक सूक्ष्म अवलोकन	डॉ० कुसुम लता	256-2
57.	हिंदी उपन्यासों में चित्रित गाँधी आंदोलन	निशा साहू	261-2
58.	GANDHI'S VISION OF NATIONAL LANGUAGE	Dr. Anshu Puri	265-2
59.	Gandhi : The Harbinger of Cleanliness	Dr. Subhash	270-2
60.	Human Right and Mahatma Gandhi	Dr. Pankaj Pandey	275-2
61.	महात्मा गांधी के विचारों का शांति एवं सुरक्षा पर प्रभाव	डॉ. रामतिवारी	279-2

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
October 2023 Page No. : 251-255

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

गांधी जी के विचारों की प्रासंगिकता : एक समाजशास्त्रीनय विश्लेलषण

शैलजा, शोधार्थी
प्रो0 (डॉ.) रेबू प्रकाश, असि0 प्रो0 (ए.सी.)
समाज शास्त्र, उत्तराखंड मुक्त वि. वि. हल्द्वानी, उत्तराखंड।

सार संक्षेप :-

सम्पूर्ण समाज तथा उसमे निवासरत् प्रत्येक व्यक्ति के कल्याण की बात न की जाये तब तक समाज का विकास हो ही नही सकता। गांधी जी ने भी सर्वकल्याण की बात को महत्व दिया था किन्तु अगर हम वर्तमान की बात करें तो सर्वकल्याण के स्थान पर स्व कल्याण की भावना सर्वोपरि होने लगी है। परिणामस्वरूप प्रत्येक व्यक्ति केवल अपने बारे में सोच रहा है। अतः आज समाज को व्यवस्थित एवं संगठित रखने तथा सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिए गांधी जी के विचारों की प्रासंगिकता वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण स्थान लेने लगी है। क्योंकि विकास एवं प्रगति ने जहां समाज को विकसित करने में अपनी अग्रणी भूमिका का निर्वहन किया है वहीं दूसरी ओर स्वार्थ भ्रष्टाचार एवं अपराधिक दृष्टिकोण ने कई नवीन तरह की समस्याओं को भी जन्म दिया है। अतः हमें इन प्रमुख समस्याओं एवं गांधी जी के मानव कल्याण से युक्त विचारों को समझना एवं आत्मसात करना अनिवार्य सा प्रतीत होता है। अतः प्रस्तुत शोध पत्र उक्त सन्दर्भ में मुख्य शोध बिन्दु के रूप में रेखांकित करने का प्रयास किया है।

बीज शब्द :- सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, स्वदेशी आंदोलन, सामाजिक न्याय।

विषय प्रवेश :-

महात्मा गांधी जी एक बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न सामाजिक चिन्तक के रूप में बींसवी शताब्दी के उन प्रमुख विचारकों में एक माने जा सकते है जिन्होने समाज को संगठित रखने में अपना एक विशेष योगदान दिया है। जैसे कि यह सर्वविदित है कि समाज परिवर्तनशील होता है। अर्थात सामाजिक परिवर्तन प्रकृति का नियम है तथा प्रत्येक समाज क्रमिक परिवर्तन की दिशा की ओर सदैव अग्रसर होता है इस तथ्य को झुठलाया नहीं जा सकता कि जब भी सामाजिक परिर्वतन होगा तब समाज पर सदैव इसके सकारात्मतक एवं नकारात्माक प्रभाव परिलक्षित भी होंगे। यही सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रभाव समाज को विकास और प्रगति की ओर तो उन्मुख करते ही है साथ ही कई नवीन तरह की समस्याओं अथवा दुष्प्रभावों को भी परिलक्षित करते है। वर्तमान में परिप्रेक्ष्य के सन्दर्भ में यदि आज हम गांधी जी के विचारों का मूल्यांकन करें तो आज भी उनके द्वारा प्रदत्त विचार एक

मार्गदर्शक के रूप में हमारा मागदर्शन करेगें। एक समाजशास्त्र के विद्यार्थी होने के नाते यदि हम समाज का विश्लेषण करे तो समाज का निर्माण पूर्ण रूप से मानव समूह द्वारा निर्मित है। यह वास्तविकता है कि मानव एवं समाज को पृथक नही समझा जा सकता दोनो ही एक दूसरे के पूरक है तथा एक दूसरे के बिना दोनों के अस्तित्व की कल्पना तक नहीं की जा सकती। अगर सरल शब्दों मे समाज व व्यक्ति के सम्बन्ध की परिचर्चा की जाये तो दोनो ही मिलकर एक सभ्य समाज का निर्माण करते है तथा स्वयं मनुष्य भी अपना इस समाज में जीवन व्यतीत कर सर्वांगीण विकास करता है। इस सम्बन्ध में यदि हम गांधी जी के विचारो की बात करे तो स्वय गांधी जी भी व्यक्ति और समाज को पृथक–पृथक नहीं मानते थे। उनका कहना था कि व्यक्तिगत और सामाजिक क्षेत्र अलग–अलग नही बल्कि एक ही क्षेत्र के दो हिस्से है। दो पहलू है, चूंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसे अपने विकास के लिए समाज पर निर्भर रहना पडता है, किन्तु इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि समाज व्यक्ति पर निर्भर नहीं है। जब तक समाज के व्यक्तियों की प्रगति नहीं होती है। सामाजिक प्रगति और विकास सम्भव नहीं है, गांधी जी ने आदर्श समाज की स्थापना का स्वप्न देखा था। इस आदर्श समाज का निर्माण उन व्यक्तियों से होता है जो प्रेम और बंधुत्व की भावना से ओत–प्रोत होते है। जो अपने लिए जिन्दा ना रहकर दूसरो के लिए जिन्दा रहते है। गांधी जी बेथम के "अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम सुख" में विश्वास नहीं करते थे, अपितु उनका तो कहना था कि सभी व्यक्तियों के लिए अधिकतम सुख की प्राप्ति ही आदर्श राज्य का उद्देश्य होना चाहिए।"

गांधी जी अपने पत्र "हरिजन" में लिखते हैं कि मैं व्यक्तिगत स्वतंत्रता को महत्व देता हूँ, लेकिन तुम्हे यह भूलना नहीं चाहिये कि मनुष्य आवश्यकता से एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक प्रगति की जरूरतों के साथ अपने व्यक्तिवाद के अनुकूलन के ज्ञान के द्वारा वह वर्तमान स्थिति तक पहुंचा है। अप्रतिबन्धित व्यक्तिवाद जंगली नियम है। सम्पूर्ण समाज के कल्याण के लिए सामाजिक नियत्रण की स्वैच्छिक अधीनता व्यक्ति एवं समाज दोनों को समद्ध करती है।

महात्मा गांधी जी ने व्यक्ति को समाज की आत्मा माना था। गांधी जी का मानना था कि "जिस प्रकार व्यक्ति की प्रगति ओर विकास के लिए आत्मा को विकसित करना आवश्यक है। ठीक उसी प्रकार समाज की प्रगति और कल्याण के लिए व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास अनिवार्य है। समाज का विकास और प्रगति व्यक्तियों के कार्यो पर आधारित है। इसके साथ ही समाज को ऐसे अवसर प्रदान करना चाहिए जिससे व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का समुचित विकास कर सके।"

अतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि समाज और व्यक्ति विशेष एक दूसरे के ऊपर पूर्ण रूप से आश्रित होते है। समाज तभी विकास और प्रगति की ओर उन्मुख हो सकता है। आज जब उसमे निवासरत् व्यक्ति का सर्वांगीण विकास हो, साथ ही इस वास्तविकता से भी इन्कार नहीं किया जा सकता है कि जब तक सम्पूर्ण समाज तथा उसमे निवासरत् प्रत्येक व्यक्ति के कल्याण की बात न की जाये तब तक समाज विकास की दिशा की ओर अग्रसर हो ही नहीं सकता। गांधी जी ने भी सर्वकल्याण की बात को महत्व दिया था किन्तु अगर हम वर्तमान परिप्रेक्ष्य की बात करे तो आज जब सर्वकल्याण के स्थान पर स्वकल्याण की भावना सर्वोपरि होने लगी है। परिणाम स्वरूप प्रत्येक व्यक्ति केवल अपने बारे में सोच रहा है। अतः आज समाज को व्यवस्थित एवं संगठित रखने तथा सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिए गांधी जी के विचारों की प्रासंगिता वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में

महत्वपूर्ण स्थान लेने लगी है। क्योंकि विकास एवं प्रगति ने जहाँ समाज को विकसित करने में अपनी अग्रणी भूमिका का निर्वहन किया है वहीं दूसरी ओर स्वार्थ भ्रष्टाचार एवं अपराधिक दृष्टिकोण ने कई नवीन तरह की समस्याओ को भी जन्म दिया है। अत हमें इन प्रमुख समस्याओं एवं गांधी जी के मानव कल्याण से युक्त विचारो को समझना एवं आत्मसात करना अनिवार्य सा प्रतीत होता है। अतः प्रस्तुत शोध पत्र उक्त सन्दर्भ में मुख्य शोध बिन्दु के रूप में रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य :-

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य गांधी जी के विचारों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता को समझना।

शोध अभिकल्प एवं पद्धति शास्त्र :-

प्रस्तुत शोध पत्र पूर्ण रूप से द्वैतियक आकड़ों पर आधारित है। जिसमें मुख्य रूप से शोध–पत्रों संदर्भित पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं एवं शोध ग्रन्थों का उपयोग किया गया है।

उपलब्धियां

सत्य् अहिंसा :-

यह वास्तविकता है कि गांधीवादी मूल्यों का सही तरीके से पालन करने से समाज नवनिर्माण की ओर बढ़ेगा। सार्वजनिक सेवा, सत्य और अहिंसा के माध्यम से समाज का सुधार किया जा सकता है। गांधी जी ने अहिंसा को अपने सत्याग्रह के मूल सिद्धांत के रूप में प्रमाणित किया था। वर्तमान में, अहिंसा का महत्व अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि गत वर्षों में अनंतनाग आतंकी हमला, पुलवामा हमला, मणिपुर हिंसा, रूस–यूक्रेन युद्ध और हमास–इजरायल युद्धआदि घातक घटनाओं ने दिखाया कि आज आंतकवाद, अपराध और समाज में आपसी मतभेद बढ़ रहे हैं। अतः गांधीवादी विचारधारा, संघर्षों और विवादों को शांतिपूर्वक हल करने के लिए एक मार्ग प्रशस्त कर सकता है। गांधी जी के विचार (सत्य और अहिंसा) आपसी सहमति और सामाजिक समरसता की दिशा में मदद कर सकते हैं। गांधी जी के सिद्धांतों का अनुसरण भी कई लोगों ने किया है, जैसे नेल्सन मंडेला।

सत्याग्रह (सविनय अवज्ञा) का महत्व :-

सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा गांधी जी के सिद्धांतों का महत्वपूर्ण हिस्सा थे। आज के समय में गांधी जी के यह सिद्धांत, लोगों को अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाने और अन्याय के खिलाफ लड़ने का साहस देते हैं। गांधी जी ने बताया कि सत्याग्रह के साथ–साथ सविनय अवज्ञा कैसे एक राजनीतिक और सामाजिक सुधार के लिए एक उपयुक्त और प्रभावी उपाय हो सकते हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसान आंदोलन 2020–21 व जन लोकपाल विधेयक के लिए अन्ना हजारे जी (किसन बाबूराव हजारे) के आंदोलन सत्याग्रह के प्रमुख उदाहरण है।

स्वदेशी आंदोलन का मूल्यांकन :-

स्वदेशी आंदोलन के मूल उद्देश्य थे भारतीय जनता की स्वाधीनता और स्वायत्तता को बढ़ावा देना। आज के समय में, वैश्विकीकरण और आर्थिक परस्पर संबंधों के दौर में स्वदेशी उत्पादों का उपयोग करने से देश अपनी आर्थिक सुरक्षा में सुधार कर सकता है। साथ ही स्वदेशी उत्पादों का उपयोग करने से देश की आर्थिक वृद्धि में सहयोग दिया जा सकता है। साथ ही अनगिनत बेरोजगार लोगों को रोजगार के अवसर प्रदत्त होंगे। अर्थात सरल शब्दों में यदि कहें तो स्वदेशी उत्पादों का उपयोग करने से एक देश आर्थिक रूप से स्वावलंबी और

आत्मनिर्भरता बन सकता है। गांधी जी के स्वदेशी आंदोलन के उद्देश्य की वर्तमान में आवश्यकता को जानकर भारत सरकार ने मेक इन इण्डिया अर्थात 'भारत में बनाओ' प्रोग्राम की शुरूआत की।

सामाजिक न्याय की आवश्यकता :-

गांधी जी के सामाजिक न्याय और सामाजिक समानता का अर्थ है कि हर व्यक्ति को उसके जन्म, जाति, धर्म, लिंग, रंग, वंश, या गरीबी के आधार पर नहीं देखा जाना चाहिए। एक धर्मनिरपेक्ष समाज का निर्माण करना है, जिसमें सभी को समान अवसर और सुख–सुविधाएँ उपलब्ध हों। इसका उद्देश्य भेदभाव को दूर करना और समाज में व्यक्तित्व के विकास को प्रोत्साहित करना है। किन्तु गत वर्षों में, "कई विकसित देशों में बहुतायत नस्लीय भेदभाव की घटनाएं देखी जा रही हैं जैसे– अमेरिका में जॉर्ज फ्लायड, ब्रियोना टेलर, एलिजा मैक्लेन, जियोना जॉनसन जैसे अश्वेत लोगों को अमेरिकी पुलिस की बर्बरता की वजह से अपना जीवन गंवाना पड़ा। वर्तमान ब्रिटिश प्रधानमंत्री ऋषि सुनक का खुले मंच से यह स्वीकारना कि उन्होंने भी नस्लवाद का दंश झेला है। जबकि पिछले ऑस्ट्रेलियाई दौरे पर भारतीय तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज को दर्शकों द्वारा काला बंदर कहकर संबोधित किया जाना, इंग्लैंड के पूर्व क्रिकेट कप्तान माइकल वान द्वारा एशियाई खिलाड़ियों के प्रति नस्लीय ट्वीट करना आदि घटनाएं प्रमुख है।" भारत में भी आज कई जाति, लिंग और आर्थिक भेदभाव के मामले दृष्टिगत होते हैं। आज महिलाओं के प्रति अपराधों में वृद्धि हुई है। "समाज में व्याप्त छुआछूत की प्रथा से गाँधी जी को स्वाभाविक घृणा थी। वे इसे सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय एकता के मार्ग में दुःसाध्य अवरोध मानते थे। इसलिए इस बुराई को समूल नष्ट करना चाहते थे।" आज गांधी जी के सिद्धांतों के द्वारा समाज में सामाजिक न्याय और समाजिक समरसता को प्रोत्साहित करना होगा। "वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी गाँधी जी के सर्वोदय विचारों का व्यवहारिक प्रयोग कर सामाजिक न्याय की स्थापना की जा सकती हैं। गाँधी जी सामाजिक न्याय के प्रखर प्रवक्ता थे। पिछड़े, कमजोरों, अछूतों और दलितों का उत्थान उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता थी।" सम्पूर्ण विश्व में 21 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय नस्लीय भेदभाव उन्मूलन दिवस का आयोजन किया जाता है।

निष्कर्ष :-

सम्पूर्ण शोध पत्र के विवेचन के आधार पर स्पष्ट है कि आज भी महात्मा गांधी के विचार और सिद्धांत हमारे समाज के लिए महत्वपूर्ण हैं और हमें उनके सिद्धांतों का आत्मसात करने के लिए उनका सही तरीके से अनुसरण करने की आवश्यकता है। वर्तमान समय में गांधी जी के विचार हमें एक सशक्त और समृद्ध समाज की दिशा में मदद कर सकते हैं। इस शोध पत्र में गांधीवादी मूल्यों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया गया है, जिनका मुख्य उद्देश्य यह है कि समाज में सुधार गांधीवादी मूल्यों जैसे सत्य, अहिंसा, सविनय अवज्ञा, स्वदेशी, और सामाजिक न्याय के माध्यम से भी संभव है। सत्य, अहिंसा, और सविनय अवज्ञा राजनीतिक और सामाजिक सुधार के लिए महत्वपूर्ण है। विशेष रूप से वर्तमान में जब हम आपसी मतभेद, आतंकवाद, और अपराध की घटनाओं का सामना कर रहे हैं। गांधीवादी सिद्धांतों के पालन से हम संघर्षों और विवादों को शांति से भी हल कर सकते हैं। गांधी जी के स्वदेशी अवधारणा को अपनाने व स्वदेशी उत्पादों का उपयोग करने से एक देश आर्थिक रूप से स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बन सकता है। यह भी दृष्टिगत है कि गांधीवादी सिद्धांतों के पालन से हम आज के आर्थिक परिप्रेक्ष्य में भी उनके विचारों को अपना सकते हैं। सामाजिक न्याय की आवश्यकता के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि गांधीवादी मूल्यों के पालन से समाज में सामाजिक न्याय और समरसता को

प्रोत्साहित किया जा सकता है, जिससे सभी को समान अवसर और सुख–सुविधाएँ मिलती हैं, और भेदभाव को दूर किया जा सकता है। इस तरह, गांधीवादी मूल्यों का पालन सामाजिक और आर्थिक सुधार के साथ ही पर्यावरण के लिए भी महत्वपूर्ण है, और यह आज के समय में भी महत्वपूर्ण संदेश देता है कि हमें सत्य, अहिंसा, सविनय अवज्ञा, स्वदेशी, और सामाजिक न्याय के मूल सिद्धांतों का पालन करना चाहिए ताकि हम समाज में सुधार कर सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. बघेल डी. एस. "महान समाजशास्त्री विचारक 2002 ममता प्रिंटर्स भोपाल, पृ. नं. 132"
2. Harijan, May 27, 1934, Page No. 144 (उद्धृत उपरोक्त Page No 133)
3. उपरोक्त, पेज नं. 133
4. https://www.drishtiias.com/hindi/blog/current%20status&and&solutions&to&racial&discrimination&globally#:~:text(%E0%A4%A8%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%B2%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%A6%3A|%E0%A4%94%E0%A4%B0%20%E0%A4%AA%E0%A5%82%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%97%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%B9%20%E0%A4%A6%E0%A5%81%E0%A4%A8%E0%A5%8B%E0%A4%82%20%E0%A4%B9%E0%A5%8B%E0%A4%A4%E0%A5%87%20%E0%A4%B9%E0%A5%88%E0%A4%82%E0%A5%A4
5. कुमार रणजीत, "सर्वोदय एवं सामाजिक न्याय का गांधीवादी परिप्रेक्ष्य" 2010 Indian J. Soc. & Pol. 05(01) : 129–132
6. उपरोक्त, पेज नं. 131
7. https://www.rachanakar.org/2015/06/blog&post_754.html

PRINTED MATTER/PRINTING BOOK CLAUSE 121 (A) P & T GUIDE

डॉ. अमिता प्रकाश

कृतियां - रंगों की तलाश (कहानी संग्रह)
पहाड़ के बादल (कहानी संग्रह)
पंकज बिष्ट का आधुनिक भावबोध (शोध ग्रंथ)
आवाज रोशनी है (संस्मरण)
देश विदेश की विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में कहानी, कविता एवं शोध आलेखों का प्रकाशन।

पुस्तक संपादन -

"Environmental Education for Social Sustainability" 2015, Ed. Dr. Prem Prakash, Dr. Amita Prakash & Narendra Kumar Singh, Adhyayan Publishers and Distributors, New Delhi, ISBN : 978-81-8435-468-3.

सामाजिक पर्यावरण चिन्तन एवं विमर्श- संपादक डॉ0 अमिता प्रकाश एवं डॉ0 रेनू प्रकाश, अध्ययन पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2015, ISBN : 978-81-8435-471-3

Ecological Ignorance in Development Raising Disastrous Possibilities" 2017, Ed. Dr. Prem Prakash, Narendra Kumar Singh & Dr. Amita Prakash, Anamika Publishers & Distributors, New Delhi, ISBN : 978-81-7975-894-6.

सम्मान :-

- कथा भूषण सम्मान राष्ट्रभाषा स्वाभिमान न्यास, गाजियाबाद-2017
- कथा शिरोमणि, साहित्य शारदा मंच, खटीमा उधमसिंह नगर, उत्तराखंड-2018
- हिंदी गौरव सम्मान अंतरराष्ट्रीय, हिंदी परिषद, आधारशिला विश्व हिंदी मिशन-2019
- विद्योत्तमा साहित्य सेवी सम्मान, विद्योत्तमा फाउंडेशन, नासिक-2022
- शोधश्री सम्मान, गीना प्रकाशन, भिवानी, हरियाणा-2022
- चौधरी गिरधारीलाल घासीराम सिहाग स्मृति सम्मान, भिवानी, हरियाणा-2023

संप्रति -

अर्सिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सोमेश्वर, अल्मोड़ा, उत्तराखंड।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक गुगनराम सोसायटी रजि. के लिए डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट ने नवभारत प्रिन्टर्स, भिवानी से छपवाकर गीना प्रकाशन, 202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड भिवानी-127021 (हरि.) से वितरित की।